

सूरह ता-हा - 20



सूरह ता-हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 135 आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में बह्नी और रिसालत का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिसालत देने और उन के विरोधियों का दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये बह्नी तथा रिसालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ से सुरक्षित रहेगा।
- इस में अल्लाह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, हा।
2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर कुर्आन इस लिये कि आप दुखी हों।^[1]

طه

مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ

1 अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता^[1] हो।
4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।
5. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।
6. उसी का^[2] है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।
7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।
8. वही अल्लाह है, नहीं है कोई बंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम हैं।
9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?
10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहा: अपने परिवार से रुको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।^[3]
11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा!

إِلَّا أَنْذِرَهُ لِمَنْ يَخْشَى ۝

تَنْزِيلًا مِّنْ خَلْقِ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ۝

الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۝

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۝

وَإِنْ تَجَهَّرَ بِ الْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَ وَأَخْفَى ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

إِذْ رَأَاهُ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدُ عَلَى النَّارِ
هُدًى ۝

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يٰمُوسَى ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने तथा कुकर्मों के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् उसी के स्वामित्व में तथा उस के आधीन है।

3 यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मद्यन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) "तुवा" में है।
13. और मैं ने तुझ को चुन^[1] लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वही की जा रही है।
14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (बंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना^[2] करा।
15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।
16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।
17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?
18. उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यक्तायें (भी) हैं।
19. कहा: उसे फेंकिये, हे मूसा!

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَأَخْلَعُ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِآلِوَادِ الْمُقَدَّسِينَ طَوًى ۝

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لَتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۝

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ۝

وَمَا إِلَيْكَ بِعِصْيِكَ يُوسَىٰ ۝

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ۝

قَالَ أَلْقَهَا يُوسَىٰ ۝

1 अर्थात् नबी बना दिया।

2 इबादत में नमाज़ सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।
21. कहा: पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।
22. और अपना हाथ लगा दे अपनी कांख (बगल) की ओर, वह निकलेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।
23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।
24. तुम फिरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।
25. मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।
26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।
27. और खोल दे, मेरी जुबान की गाँठ।
28. ताकि लोग मेरी बात समझें।
29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।
30. मेरे भाई हारून को।
31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।
32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।
33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

فَالْقَمَهِمَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰی ۝

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْزَنْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْاُولٰی ۝

وَاَضْمُوْیْدَاۤ اِلٰی جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيِّضًا مِّنْ غَيْرِ
سُوْءِۤ اٰیَةٍ اٰخَرٰی ۝

لِّیُرٰیكَ مِنْ اٰیٰتِنَا الْكُبْرٰی ۝

اِذْهَبْ اِلٰی فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغٰی ۝

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِّیْ صَدْرِیْ ۝

وَبَسِّرْ لِّیْ اَمْرِیْ ۝

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ۝

یَفْقَهُوا قَوْلِیْ ۝

وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اٰهْلِیْ ۝

هُرُوْدًا اَخِیْ ۝

اَشْدُدْ لِّیْ اَزْدِیْ ۝

وَاشْرِكْهُ فِیْ اَمْرِیْ ۝

کِیْ نُسَبِّحَکَ کَثِیْرًا ۝

34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।

35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।

36. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयी।

37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और^[1] (भी)।

38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है।

39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु^[2], और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष^[3] प्रेम ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।

40. जब चल रही थी तेरी बहन^[4], फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त कर

وَنَذَرْنَا كَثِيرًا ۝

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ۝

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسَىٰ ۝

وَلَعَدْنَاكَ عَلَيْنَا مَرَّةً أُخْرَىٰ ۝

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝

إِنْ أَقْدِرْ فِيهِ فِي الثَّابُوتِ فَأَقْدِرْ فِيهِ فِي الْيَمِّ ۝
فَلْيَلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ
لَّهُ ۝ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۝ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ
عَيْنِي ۝

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن
يَكْفُلُهُ ۝ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا
وَلَا تَحْزَنَ ۝ وَكَتَلْتَ نَفْسًا فَرَجَّعْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ
وَقَتَلْنَاكَ ۝ فُتَوْنَا ۝ فَلْيَنْتَ سَيْنِينَ فِي أَهْلِ
مَدْيَنَ ۝ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يٰمُوسَىٰ ۝

1 यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फिरऔन का आदेश था कि बनी इस्राईल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।

2 इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फिरऔन है।

3 अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फिरऔन का भी प्रिय बना दिया।

4 अर्थात् सन्दूक के पीछे नदी के किनारे।

दिया चिन्ता^[1] से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षा मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۖ

42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।

إِذْ هَبَّ اُنْتِ وَالْخَوْلَ بِالنِّبِيِّ وَلَا تَنْبِئَانِي ذِكْرِي ۖ

43. तुम दोनों फिरौन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।

إِذْ هَبَّآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ

44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لِّئِنَّا لَمَلَكٌ يَّتَذَكَّرُ أَوْ يُخْشَىٰ ۖ

45. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّا نَخَافُ أَنْ يُفْرَطَ عَلَيْنَا أَوَّانٌ يَّطْغَىٰ ۖ

46. उस (अल्लाह) ने कहा: तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۖ

47. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है,

فَأْتِيهِ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَا تَحْذِقْهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلَيْنَا مِنَ النَّارِ الْهَدَىٰ ۖ

1 अर्थात् एक फिरौनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्यन चले गये, इस का वर्णन सूरह कसस में आयेगा।

जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।

48. वास्तव में हमारी ओर बह्यी (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।

49. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?

50. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन^[1] दिया।

51. उस ने कहा: फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?

52. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न^[2] भूलता है।

53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकाली।

54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُوسُفُ

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ

قَالَ فَمَآ بَالُ الْفُرُوفِ الْأُولَىٰ

قَالَ عَلِمْنَا عِنْدَ رَبِّنَا فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَىٰ

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّىٰ

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّعْيِ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यकता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

2 अर्थात् उन्होंने ने जैसा किया होगा, उन के आगे उन का परिणाम आयेगा।

55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुनः^[1] निकालेंगे।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ۝

56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।

وَلَعَدَّآرِئِنَّهُ إِنِّي أُلْحِقُهَا فَكُذَّبَ وَأَبَى ۝

57. उस ने कहा: क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?

قَالَ اجْتَنَسْنَا الْخُرُوجَ مِنْ أَرْضِنَا بِحُجْرِكَ يَمُوسَى ۝

58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।

فَلَمَّا تَبَيَّنَكَ بِحُجْرٍ مِثْلِهِ فَأَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝

59. मूसा ने कहा: तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन^[2] है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُخَشِعَ النَّاسُ ضِعْفَى ۝

60. फिर फिरऔन लोट गया^[3], और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।

فَمَوَّلَىٰ فِرْعَوْنَ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ۝

61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अल्लाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيَلَكُمْ آلَتُنَا وَعَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْجَنَ بَعْدَآيٍ وَقَدْ خَابَ مَنْ افْتَرَى ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन पुनः जीवित निकालेंगे।

2 इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

3 मूसा के सत्य को न मान कर, मुकाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

62. फिर^[1] उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।

63. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।

64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

65. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंके?

66. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।

67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।^[2]

68. हम ने कहा: मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।

69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

فَنَارَعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا السَّجْوَى ۝

قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسِحْرَانِ يُبْدِيَانِ أَنْ يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَى ۝

فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتَّصَفُوا وَقَدْ أَقْلَمَ الْيَوْمُ مَنَ اسْتَعْلَى ۝

قَالُوا يَمُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ آوَّلَ مَنَ الْفَى ۝

قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا حِجَابًا لَّهُمْ وَعِصِيًّا لَهُمْ يَغِثِلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنهَاسُغَى ۝

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَى ۝

قُلْنَا لَأَخَذَنَّ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۝

وَأَلْقَىٰ مَا فِي يَمِينِكَ تَلَقَّفَ تَاَصَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٌ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ۝

1 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया। कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।

2 मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये, उन्होंने ने कहा कि हम ईमान लाये हारून तथा मूसा के पालनहार पर।

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى ۝

71. फिरऔन बोला: क्या तुम ने उस का विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत दिशा¹ से, और तुम्हें सूली दे दूँगा खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।

قَالَ امْنُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَيْدٌ ۝
الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَا تَقْطَعْنَ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ
مِنْ خِلَافٍ وَلَا تَصِلَنَّكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ
وَلَتَعْلَمُنَّ إِنَّا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۝

72. उन्होंने ने कहा: हम तुझे कभी उन खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी है, और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया है, तू जो करना चाहे कर ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में आदेश दे सकता है।

قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ
وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ إِنَّمَا
تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त² है।

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا آتَاكَمْنَا
عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

74. वास्तव में जो जायेगा अपने पालनहार के पास पापी बन कर तो उसी के लिये नरक है, जिस में न

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝

1 अर्थात् दाहिना हाथ और बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ और दाहिना पैर।

2 और तेरा राज्य तथा जीवन तो साम्यिक है।

वह मरेगा और न जीवित रहेगा।^[1]

75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।

76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।

77. और हम ने मूसा की ओर वही की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले^[2], तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।

78. फिर उन का पीछा किया फिरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।

79. और कुपथ कर दिया फिरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।

80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी^[3] ओर का, तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्वा"^[4]

81. खाओ उन स्वच्छ चीजों में से जो

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى ۖ

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ يَبْسُ لَا تَحْنُفُ وَرَكَاعًا وَلَا تَخْشَىٰ ۖ

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَبُجُودُهُ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَاءٌ غَاشِيُهُمْ ۖ

وَاصْلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَآ هَدَىٰ ۖ

يَنفِي إِسْرَآءِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكَ وَوَعَدْنَاكَ حَآئِبَ الْوُجُوهِ الْيَمْنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ ۖ

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ

1 अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

2 इस का सविस्तार वर्णन सूरह शुअरा-26 में आ रहा है।

3 अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।

4 मन्न तथा सल्वा के भाष्य के लिये देखिये: बकरा, आयत: 57।

जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा
उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा
उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप।
तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा
प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।

82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ
उस के लिये जिस ने क्षमा याचना
की, तथा ईमान लाया और सदाचार
किया फिर सुपथ पर रहा।

83. और हे मूसा! क्या चीज़ तुम्हें ले आई
अपनी जाति से पहले?^[1]

84. उस ने कहा: वे मेरे पीछे आ ही रहे
हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ
गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू
प्रसन्न हो जाये।

85. अब्राह ने कहा: हम ने परीक्षा में
डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने
के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है
उन को सामरी^[2] ने।

86. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति
की ओर अति क्रुद्ध-शोकातुर हो कर।
उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो!
क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे
पालनहार ने एक अच्छा वचन?^[3] तो
क्या तुम्हें बहुत दिन लग^[4] गये?

فَيَحِلُّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي وَمَنْ يَحْلِلْ عَلَيْهِ
غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۝

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَامِنْ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝

وَمَا أَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يَمُوسَىٰ ۝

قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝

قَالَ فَإِنَّكَ مُنَاقِقٌ قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ
وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ يَقَوْمِ اذْهَبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَعَدَا حَسَنًا أَفْطَالِ
عَلَيْكُمْ الْعَهْدُ أَمَّا زُشَمَاءُنَّ فَيَحِلُّ عَلَيْكُمْ
غَضَبُ مَنْ رَبَّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَوْعِدِي ۝

1 अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें पीछे क्यों छोड़ दिया?

2 सामरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।

3 अर्थात् धर्म-पुस्तक तौरात देने का वचन।

4 अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।

अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन^[1] को भंग कर दिया।

87. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति^[2] के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक^[3] दिया, और ऐसे ही फेंक^[4] दिया सामरी ने।

88. फिर वह^[5] निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहा: यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

89. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?^[6]

90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है

قَالُوا مَا آخَلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حُمِلْنَا أَوْثَارًا
مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدْ فَتَنَّاكَ بِذَلِكَ الْفَقِ
السَّامِرِيُّ ۝

فَاخْرَجَ لَهُمْ عَجَلًا جَسَدًا آلَهُ خُورًا فَقَالُوا هَذَا
إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ هَٰ فَنَسِيَ ۝

أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا يُرْجِعُهُمُ قَوْلُهُ وَلَا يَمْلِكُ
لَهُمْ صَرْفٌ وَلَا نَفْعٌ ۝

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ يَقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ
بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِيَ ۝

1 अर्थात् मेरे वापिस आने तक, अल्लाह की इबादत पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की थी।

2 जाति से अभिप्रेत फिरौन की जाति है, जिन के आभूषण उन्होंने ने उधार ले रखे थे।

3 अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा, और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

4 अर्थात् जो कुछ उस के पास था।

5 अर्थात् सामरी ने आभूषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया।

6 फिर वह पूज्य कैसे हो सकता है?

इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

91. उन्होंने ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عَافِيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۝

92. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

قَالَ يَهُودُؤُ مَا مَنَّكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوْا ۝

93. कि मेरा अनुसरण न करे? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

أَلَا تَتَّبِعُنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۝

94. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और^[1] प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝

95. (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۝

96. उस ने कहा: मैं ने वह चीज़ देखी जिसे उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पदचिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे^[2] मेरे मन ने।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهُ فَفَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝

1 (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 142)

2 अधिकांश भाष्यकारों ने रसूल से आभिप्राय जिब्रील (फ़रिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह बात बनाई कि जब उस ने फिरऔन और उस की सेना के डूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़े पर सवार वहाँ देखा तो उन के घोड़े के पदचिन्ह की मिट्टी रख ली। और जब सोने का बछड़ा

97. मूसा ने कहा: जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहे: मुझे स्पर्श न करना।^[1] तथा तेरे लिये एक और^[2] वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के।

98. निःसंदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुरआन)।

100. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी^[3] बोझ।

101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ وَانْظُرْ إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۝

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۝

خَالِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۝

बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज़ निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

1 अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

2 अर्थात् परलोक की यातना का।

3 अर्थात् पापों का बोझ।

102. जिस दिन फूंक दिया जायेगा सूर^[1] (नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर देंगे पापियों को उस दिन इस दशा में कि उन की आँखें (भय से) नीली होंगी।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ
رُؤُوسًا

103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।

يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا عَشْرٌ ۖ

104. हम भली-भाँति जानते हैं, जो कुछ वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन में से सब से चतुर कि तुम केवल एक ही दिन रहे^[2] हो।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً
إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا يَوْمٌ ۚ

105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर-चूर कर के।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ

106. फिर धरती को छोड़ देगा समतल मैदान बना कर।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۚ

107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई टेढ़ापन और न नीच-ऊँचा।

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۚ

108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने वाले के, कोई उस से कतरायेगा नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम नहीं सुनोगे कानाफूँसी की आवाज़ के सिवा।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۚ

1 «सूर» का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश से एक फरिश्ता इसाफील अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्नद अहमद: 2191) और पुनः फूकेगा तो सब जीवित हो कर हश्र के मैदान में आ जायेंगे।

2 अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दो क्षण प्रतीत होगा।

109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील, और प्रसन्न हो उस के^[1] लिये बात करने से।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَفِيَ لَهُ قَوْلُهُ ۖ

110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝

111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद^[2] लिया।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝

112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन से।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कूर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝

114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता^[3] न करें कूर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

1 अर्थात् जिस के लिये सिफारिश कर रहा है।

2 संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो।

3 जब जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वही (प्रकाशना) लाते, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जाये, उन के साथ साथ ही पढ़ने लगते। अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह कियामा, आयत: 75 में आ रहा है।

जाये आप की ओर इस की वही (प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

115. और हम ने आदेश दिया आदम को इस से पहले, तो वह भूल गया, और हम ने नहीं पाया उस में कोई दृढ़ संकल्प।^[1]

116. तथा जब हम ने कहा फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम को, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा, उस ने इन्कार कर दिया।

117. तब हम ने कहा: हे आदम! वास्तव में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को निकलवा दे स्वर्ग से और तू आपदा में पड़ जाये।

118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा रहता है और न नग्न रहता है।

119. और न प्यासा होता है और न तुझे धूप सताती है।

120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा: हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा राज्य जो पतनशील न हो?

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया, फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के लिये खुल गये। और दोनों चिपकाने

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِن قَبْلِ قَنُوسٍ وَلَوْ عَصَىٰ لَهُ عَزْمًا ۝

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۝

إِنَّ لَكَ الْأَنْبُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبُلَىٰ ۝

فَاكْلَا مِنْهَا فَبَدَّتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذَرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰ آدَمُ

1 अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

رَبِّهِ فَقَوِيَ ۝

लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते।
और आदम अवज्ञा कर गया अपने
पालनहार की और कुपथ हो गया।

122. फिर उस (अल्लाह) ने उसे चुन
लिया और उसे क्षमा कर दिया और
सुपथ दिखा दिया।

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَقَاتَبَ عَلَيْهِ وَهَدَاهُ ۝

123. कहा: तुम दोनों (आदम तथा
शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम
एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये
तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन
तो जो अनुपालन करेगा मेरे
मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा
और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
فَأَمَّا يَا آدَمُ اتَّبِعْهُ هَذَا ي
فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَى ۝

124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण
से, तो उसी का संसारिक जीवन
संकीर्ण (तंग)^[1] होगा, तथा हम
उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा
कर के।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمَى ۝

125. वह कहेगा: मेरे पालनहार! मुझे
अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार
में) आँखों वाला था?

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝

126. अल्लाह कहेगा: इसी प्रकार तेरे पास
हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें
भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू
भुला दिया जायेगा।

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ
تُنْسَى ۝

127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं
उसे जो सीमा का उल्लंघन करे,
और ईमान न लाये अपने पालनहार

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَأَبْقَى ۝

1 अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे संतोष नहीं होगा। और सदा चिन्तित और व्याकुल रहेगा।

की आयतों पर। और निश्चय
आखिरत की यातना अति कड़ी तथा
अधिक स्थायी है।

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं
दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त
कर दिया इन से पहले बहुत सी
जातियों को, जो चल फिर-रही थीं
अपनी बस्तियों में, निःसंदेह इस में
निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
129. और यदि एक बात पहले से निश्चित
न होती आप के पालनहार की ओर
से, तो यातना आ चुकी होती, और
एक निर्धारित समय न होता।^[1]
130. अतः आप सहन करें उन की बातों
को तथा अपने पालनहार की
पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा
के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले^[2]
तथा सूर्यास्त से^[3] पहले, तथा रात्रि
के क्षणों^[4] में और दिन के किनारों^[5]
में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।
131. और कदापि न देखिये आप उस
आनन्द की ओर जो हम ने उन^[6] में
से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ
يَسْئَلُونَ فِي مَسْكِهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّظَرِ

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمَامِ الْجَانِ
مُحْمًى

فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ
الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ
وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَى

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْنَاهُ أَزْوَاجًا
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْثِنَّهُمْ فِيهَا

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह का यह निर्णय है कि वह किसी जाति का उस
के विरुद्ध तर्क तथा उस की निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है,
यदि यह बात न होती तो इन मक्का के मिश्रणवादियों पर यातना आ चुकी होती।

2 अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ में।

3 अर्थात् अस्त्र की नमाज़ में।

4 अर्थात् इशा की नमाज़ में।

5 अर्थात् जुहर तथा मग़िब की नमाज़ में।

6 अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान^[1] ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

132. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

133. तथा उन्होंने कहा: क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

134. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से^[2] पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले है, और किस ने सीधी राह पाई है।

وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا،
لَا تَسْأَلْكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ
لِلتَّقْوَى ۝

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ أَوَلَمْ تَأْتِهِمْ
بَيِّنَةٌ فِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ قَبْلِهِ لَقَالُوا
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ
مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْذِلَ وَغَزَى ۝

قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ
مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۝

1 अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

2 अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन के आने से पहले।